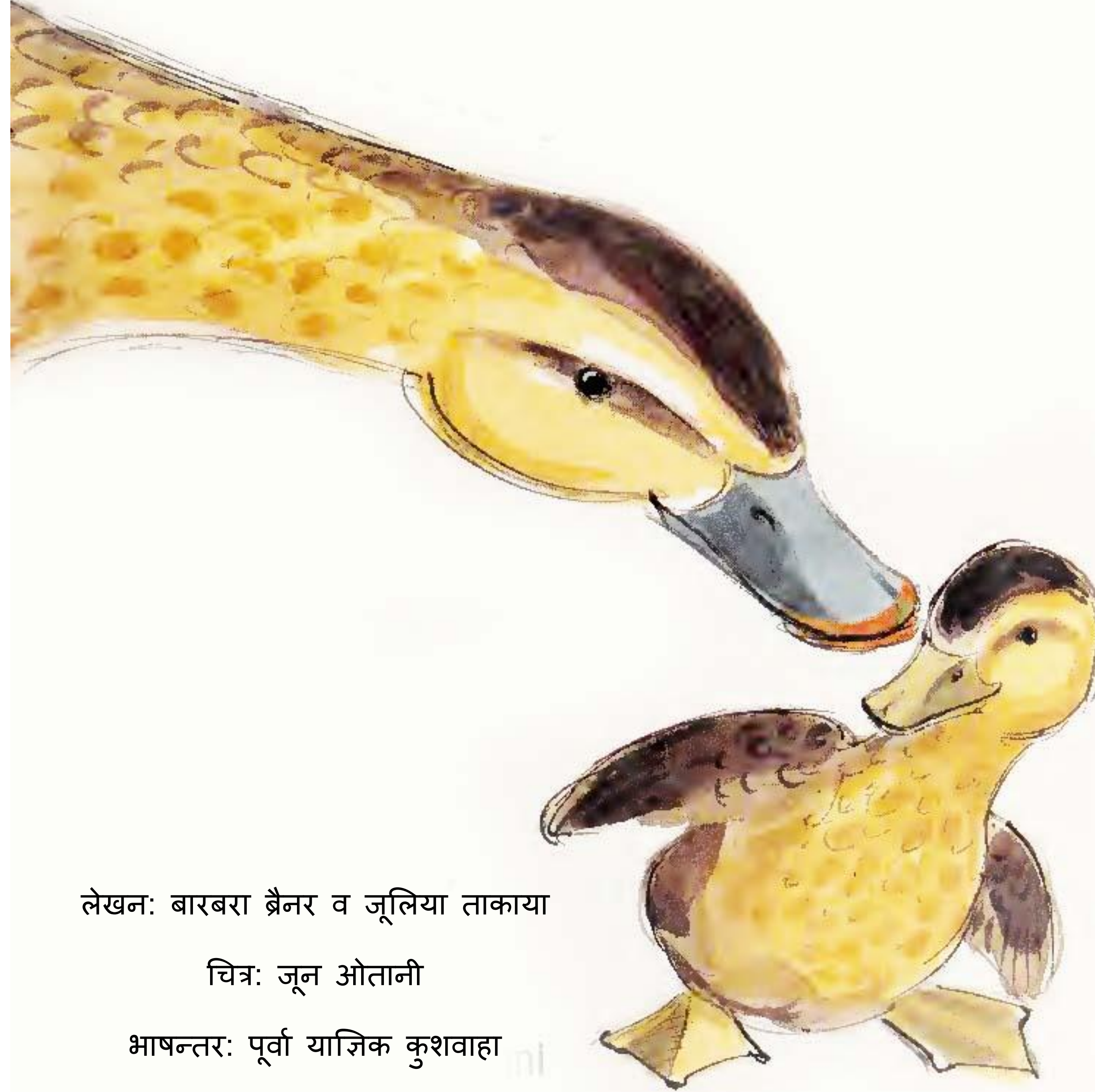
चीबी

जापानी सत्यकथा



लेखन: बारबरा ब्रैनर व जूलिया ताकाया

चित्र: जून ओतानी

भाषन्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ओका-सान (माँ), एक भूरी-सनहरी बत्तख, टोक्यो के क्षितिज के ऊपर एक माकूल जगह तलाशती उड़ रही थी। और वह जगह यह थी - एक छोटा-सा ताल जो चारों ओर से आइवी की लताओं से घिरा था।

यह ख़बर जंगल की आग की तरह शहर भर में फैल गई कि मित्सुई ऑफिस के पार्क में एक जंगली बत्तख ने अपना घोंसला बनाया है।

लोग दिन भर, किसी भी समय उसके अण्डों से एक-एक कर निकले चूज़ों को देखने, उनकी तस्वीरें खींचने के लिए आने लगे। शाम की ख़बरों में एक खास हिस्सा 'डक वॉच' भी शामिल किया गया। सबसे आख़िर में निकले चूज़े चीबी का नाम एक फोटोग्राफर मिस्टर सातो ने रखा। जापानी शब्द चीबी का मतलब होता है नन्हा। चीबी दर्शकों को सबसे ज़्यादा पसन्द आती थी।

जब ओका-सान अपने ख़ानदान को आठ लेन के राजमार्ग को पार कर अधिक बड़े सम्राट के बाग में ले जाती है, सातो-सान ही उनको कुचले जाने से बचाते हैं। बरसाती मौसम शुरू होने पर, भारी तूफ़ान के दौरान चीबी के गुम हो जाने के बाद भी मिस्टर सातो मौजूद रहते हैं। क्या मिस्टर सातो को चीबी मिल सकेगी? पूरा टोक्यो शहर चिन्ता में डूबा चीबी का इन्तज़ार करता है।

कौतुहल से भरी यह सच्ची कहानी एक बत्तख परिवार की है जो आज के व्यस्त राजमार्ग पर आ-जा रहे वाहनों को रोक देता है। कहानी टोक्यो के रोज़मर्रा के जीवन की एक झलक भी प्रस्तुत करती है।

चीबी

जापानी सत्यकथा



लेखन: बारबरा ब्रैनर व जूलिया ताकाया

चित्र: जून ओतानी

भाषन्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

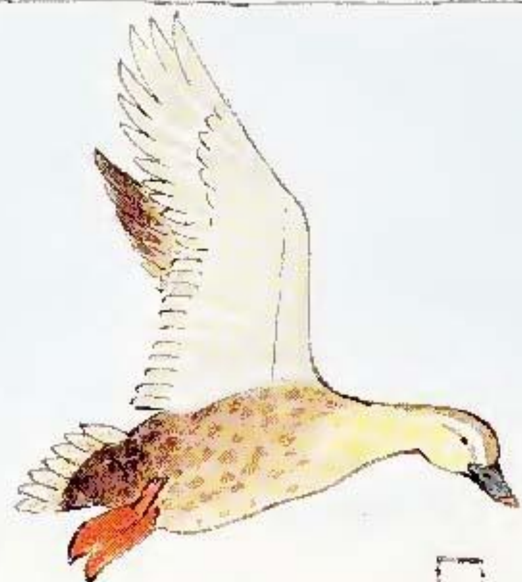


कज़न केट के लिए - बी.बी.

मेरी माँ के लिए जो कहती थी, अपने जीवन का उपयोग करो - जे.टी़

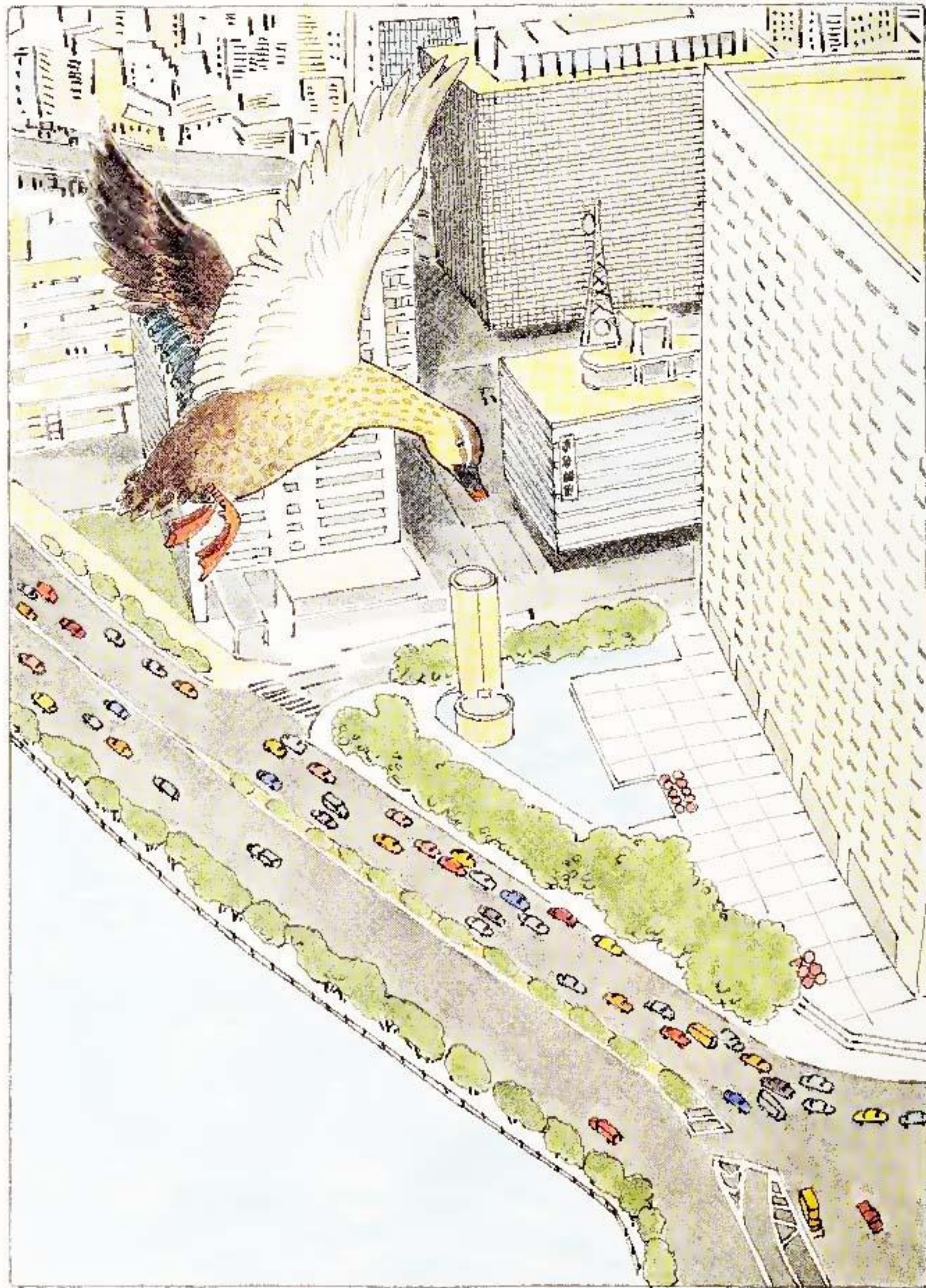
मेरे कज़न्स के लिए, रित्सुको, हिरोको और योशिका - जे.ओ.





अध्याय 1

बसन्त की एक सुबह एक भूरी-सुनहरी बत्तख टोक्यो के क्षितिज के ऊपर उड़ रही थी।



उसे काफ़ी नीचे काँच-सा चमचमाता एक ताल दिखा। वह नीचे की ओर झुकी और धीमी गति से पानी को छपछपाए बिना ही उस ताल में उतर गई। इधर-उधर नज़र डालने के बाद वह ताल के पास आइव से लदी एक झाड़ी में घुसी और अपना घोंसला बनाने लगी।

उसे इस बात से कोई परेशानी न थी कि वह टोक्यो शहर के एक दफ्तर के पार्क में है। या इससे कि *उचीबोरी डोरी* (मार्ग), जो आठ लेन वाला राजमार्ग था, उसके इतने क़रीब है। इस राजमार्ग पर हर मिनट तीन सौ मोटर गाड़ियाँ चिंघाड़ती गुज़रती हैं। वह इस सबकी परवाह किए बिना अपने काम में जुटी रही।

कुछ ही समय बाद घोंसले में दस हाथी-दांत के रंग के अण्डे थे। ओका-सान उन्हें पूरे ध्यान से सेने लगी। वह बीच-बीच में अण्डों को सावधानी से पलटती थी, ताकि हर ओर से उन्हें गरमाहट मिलती रहे।

छब्बीस दिनों बाद झुरमुट में हलचल होने लगी। एक अण्डा फूटा और एक गीला बत्तख का चूज़ा बाहर निकला, तब दूसरा और उसके बाद सात और। कुछ ही घंटों में नौ रोएंदार चूज़े माँ के गर्म परों के नीचे दुबके थे।

लग रहा था कि दसवाँ अण्डा थोथा है। पर अगले दिन वह भी फूटा और उसमें से एक बेहद छोटे और मरियल से चूज़े ने अपना सिर बाहर निकाला। ओका-सान ने बड़े धीरज से दूसरे चूज़ों को हटाकर ख़ानदान के आखिरी और सबसे नन्हे सदस्य के लिए जगह बनाई।



जैसे ही दसवें चूज़े के पर सूखे और वह अपने पैरों पर ठीक से खड़ा होने लगा, माँ बत्तख पूरे ख़ानदान को ताल के किनारे वाली कगार पर ले गई।



तब मित्सुई ऑफिस पार्क के दफ्तरों में काम करने वालों ने बत्तखों को पहली बार देखा। यह नज़ारा सनसनीखेज़ था। यह ख़बर जंगल की आग की तरह पूरे शहर में फैल गई। ग्यारह जंगली *कामो* (बत्तखों की एक प्रजाति) ताल के पास रह रहे हैं!

अब तो लोग बत्तख परिवार को देखने, उनकी तस्वीरें खींचने आने लगे। इन बत्तख दर्शकों में अख़बार के एक फोटोग्राफर मिस्टर सातो भी थे। उन्होंने ही सबसे छोटे चूज़े को *'चीबी'* नाम दिया। इस जापानी शब्द को मतलब है नन्हा।



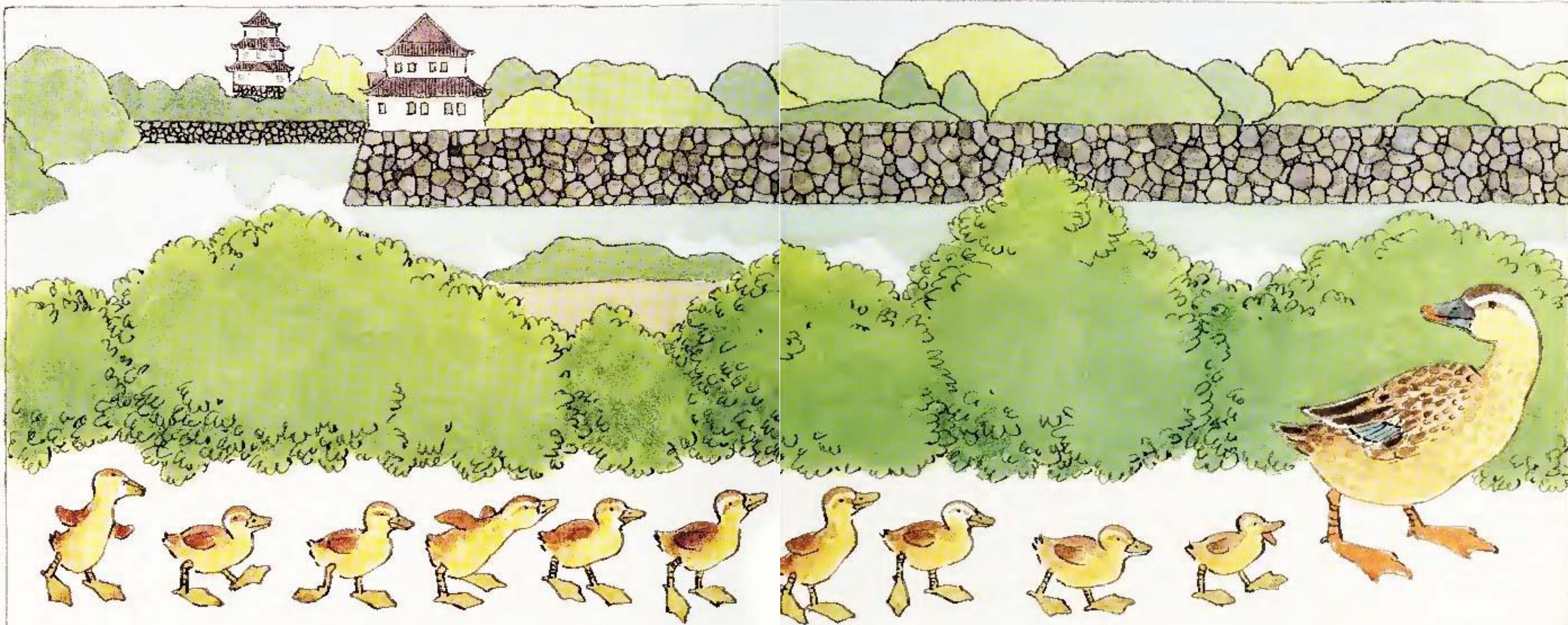
दिन-ब-दिन बत्तख दर्शकों की भीड़ बढ़ती गई। लोग अपना खाना साथ बांध कर लाने लगे, ताकि ताल के पास बैठ कर खाएं और ओका-सान और उसके परिवार को निहारें। कुछ ही समय में खाने-पीने का सामान बेचने वाले भी आ जुटे। वे अपने गरम नूडल्स, *ओडेन* (भापी सब्ज़ियाँ) और *इसोबे माकी* (समुद्री खरपतवार में लिपटे चावल के केक), आइसक्रीम और केक के ठेलों के साथ आए।

टोक्यो टेलिविज़न ने शाम की खबर में 'डक वॉच' शीर्षक से एक हिस्सा जोड़ दिया जिसमें बत्तख परिवार का ताज़ा हाल सुनाया जाता था। स्कूली बच्चे अपनी कक्षा के साथ *कामो* परिवार को देखने आते। चित्रकार तस्वीरें खींचने आते। सातो-सान तो हर दिन ही वहाँ आते।



जल्द ही हर दिन तकरीबन चार हज़ार लोग मित्सुई ऑफिस पार्क में ओका-सान और उसके चूज़ों को देखने आने लगे। चीबी सबको प्यारी लगती थी। लोग उसकी फ़िक्र करते। आखिर वह सबसे छोटी जो थी। वह अपने भाई-बहनों की तरह डगमग चाल चलने की, एक कतार बना माँ के पीछे-पीछे चलने की और पानी में पेट के बल छपाक से डुबकी लगाने की कोशिश करती। जब चीबी ने आख़िरकार पानी में डुबकी लगा खाने के लिए काई तलाशना सीख लिया, सब खुशी से 'चीबी! चीबी!' चिल्लाए। सातो-सान ने डुबकी लगाती चीबी की पहली तस्वीर भी खींची।





जून की एक सुबह ओका-सान ने शोर मचा अपने चूज़ों को इकट्ठा किया। जब सबने उसके पीछे एक कतार बना ली, वह ऑफिस पार्क के एक दरवाज़े की ओर बढ़ चली! वह दरवाज़े से कुछ पहले ही रुकी, तब मुड़ी और डगमग चाल से ताल के पास वापस लौट गई। उसके चूज़े जाते-आते वक़्त माँ के पीछे थे।

उस सुबह वह सात बार उसी दरवाज़े तक गई और लौटी।

"पगली ओका-सान क्या कर रही है?" लोगों ने एक-दूसरे से पूछा। सातो-सान को लगा कि वे बात समझ गए हैं। उन्होंने कयास लगाया कि ऑफिस पार्क का ताल बत्तख परिवार के लिए छोटा पड़ने लगा है। पर सड़क के उस पार बढ़ते चूज़ों के लिए बिलकुल माकूल जगह थी - सम्राट के बाग में बनी बड़ी-सी खाई। ओका-सान अपने परिवार को वहाँ ले जाना चाह रही होगी। उसका इरादा व्यस्त *उचीबोरी डोरी* (मार्ग) को पार करने का है!

पर भला कब? यह कोई नहीं जानता था। सातो-सान भी नहीं। पर उन्होंने पुलिस को ख़बर कर दी कि वे सावधान रहें। बत्तखों के सड़क पार जाने के वक़्त वे गाड़ियों को रोकें। सातो-सान और कुछ दूसरे फोटोग्राफर अपने स्लीपिंग बैग के साथ इस तैयारी से आए कि उन्हें रात वहीं बितानी है। उनमें से कई तो बड़ी दूर से आए थे। इस उम्मीद से कि वे *कामो* को आठ लेन वाली सड़क पार करते वक़्त फिल्म में कैद कर लेंगे।

रात हुई। शहर की बत्तियाँ जल उठीं। चाँद भी उठ आया। पर ताल के इर्द-गिर्द सब कुछ शान्त था। पौ फटी। बत्तखों पर नज़र रख रहे लोग झुरमुट में हरकत की आवाज़ें सुनने की कोशिश करने लगे। पर बत्तख परिवार सोता रहा।



सुबह के ग्यारह बज चुके थे। पर ओका-सान अब भी पंखों के नीचे सर छिपाए सो रही थी। चीबी और दूसरे चूज़े ताल में उधर-उधर जल मकड़ियों का पीछा करते तैर रहे थे। क्या माँ बत्तख ने अपना इरादा बदल लिया था? सातो-सान ने अपनी उस्तरा मशीन निकाली और दाढ़ी बनाने के बाद हाथ-मुँह धोए। उन्होंने अपना *ओचा* (हरी चाय) का थर्मस सबके बीच घुमाया। पर गरम हरी चाय रतजगे के बाद वाले उनींदेपन को दूर न कर सकी। कुछ फोटोग्राफरों ने तय किया वे लौट जाएंगे। तो दूसरे अपनी कैम्प कुर्सियों और अपने स्लीपिंग बैग पर बैठे ऊंघने लगे। समय काटने के लिए सातो-सान ने अपने सोते-ऊंघते दोस्तों की तस्वीरें खींचीं।

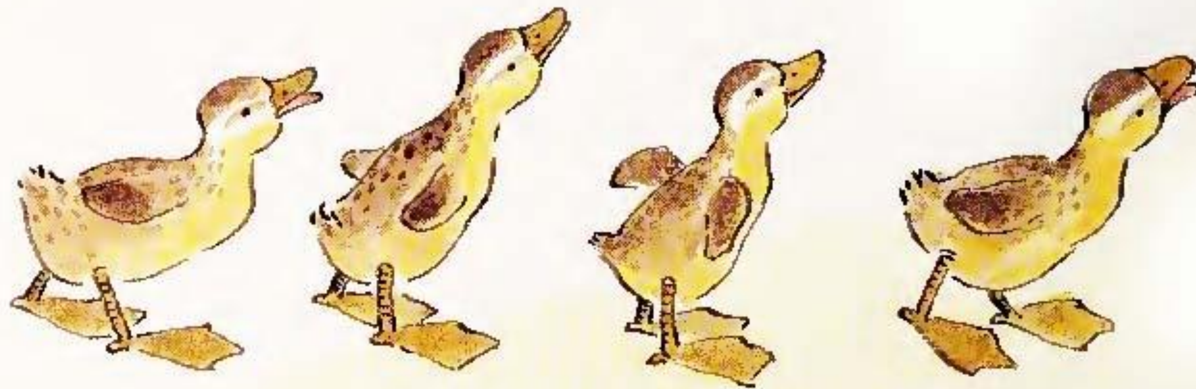


ठीक बारह बजे माँ बत्तख ने अपनी चोंच उठाई, अपनी जगह से उठी और अपनी पूंछ हिलाई। क्या चोंच उठाना या पूंछ हिलाना कोई संकेत था? सभी चूज़े अपनी माँ के पीछे एक कतार में खड़े हो गए। सबसे आगे चीबी थी, तब बाकी सब। पर ज़रा रुको! ओका-सान अपने परिवार को उस तरफ़ नहीं ले जा रही थी जहाँ दर्शक जमा थे। वह तो उल्टी ही दिशा में बढ़ रही थी।

सातो-सान पहले वक्ति थे जिन्हें समझ आया कि वह कर क्या रही है। उन्होंने घबरा कर पुलिस को फोन लगाया। तब कैमरा हाथ में थामे हुए ही अज़ेलिया के पौधों को लांघा और दूसरे दरवाज़े की तरफ़ दौड़े।



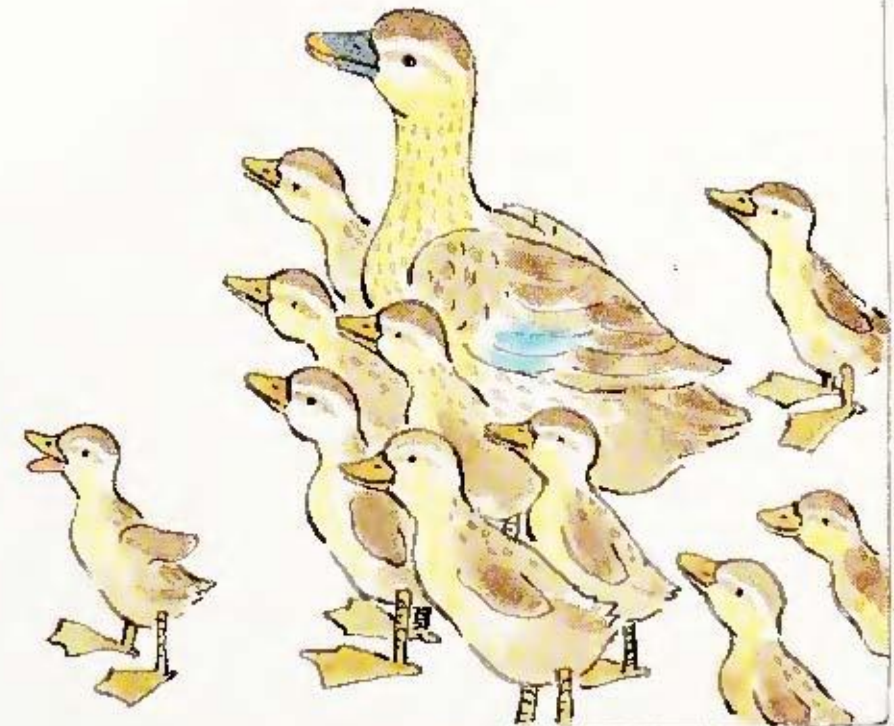
चौराहे की बत्ती मिडोरी (हरी) से अकाई (लाल) में बदल रही थी। ओका-सान ने इसकी कोई परवाह न की। वह सीधे आगे की ओर देखती डगमग चाल से बढ़ती गई। वह फुटपाथ से नीचे सड़क पर उतरी। चीबी और दूसरे चूज़ों ने भी ठीक यही किया। उसी क्षण एक स्पोर्टस् कार तेज़ी से चौराहे की ओर आई। वह सीधे बत्तखों की ओर बढ़ रही थी। सातो-सान ने, जो एक तस्वीर खींचने की तैयारी में थे, अपना कैमरा फेंका और सड़क के बीच दौड़े। बदहवासी में अपना हाथ हिलाते चालक को रुकने को कहने लगे। *"तोमाते! तोमाते!"* (रुको)।



वह कार लहराई, उसके ब्रेक चिंचियाए। पुलिस की सीटियाँ बजीं। कैमरा के फ्लैश चमके। पर ओका-सान ने किसी पर ध्यान नहीं दिया। वह अपने कुनबे को चार लेन के पार डिवाइडर के ऊपर ले गई। तब नीचे उतर बाकी के चार लेन भी पार कीं।

कुछ ही मिनटों में *कामो* परिवार चौड़े राजमार्ग को पार कर सुरक्षित दूसरी ओर पहुँच गया।

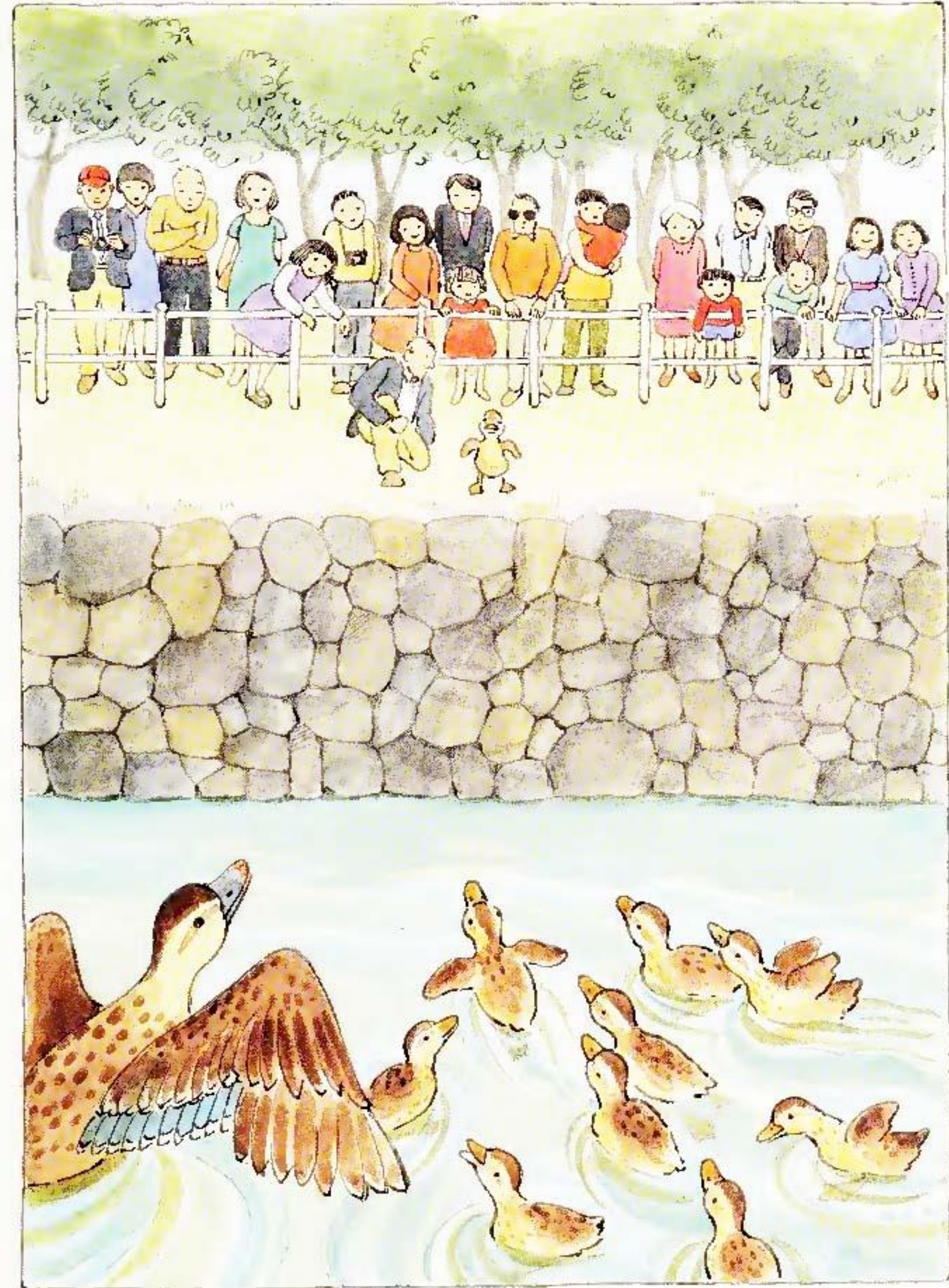
माँ बत्तख अब नीचे खाई की तरफ़ मुड़ी। पानी में उतर इधर-उधर तैरती वह अपने चूज़ों को भी उतरने को उकसाती रही। सभी चूज़े माँ की बात मान एक-एक कर पथरीले ढ़लान पर लुढ़कते-गुड़कते हरे पानी में कूद गए।



अब सिर्फ़ चीबी ऊँची दीवार पर डगमग खड़ी थी। वह दुखी आवाज़ में चिंचिया रही थी। उसके भाई-बहन ओका-सान के साथ दूर चले जा रहे थे।

सातो-सान ने कहा, "चीबी चलो कूदो, तुम कर सकती हो।"

अब ओका-सान वापस मुड़ी और फ़िक्रमन्द हो आवाजें निकालने लगी। चीबी ने नीचे पानी की ओर देखा। वह दूर, बहुत दूर था। उसे दीवार ज़रूर फूजी पर्वत जैसी लग रही होगी। उसने एक आखिरी आवाज़ निकाली, और -



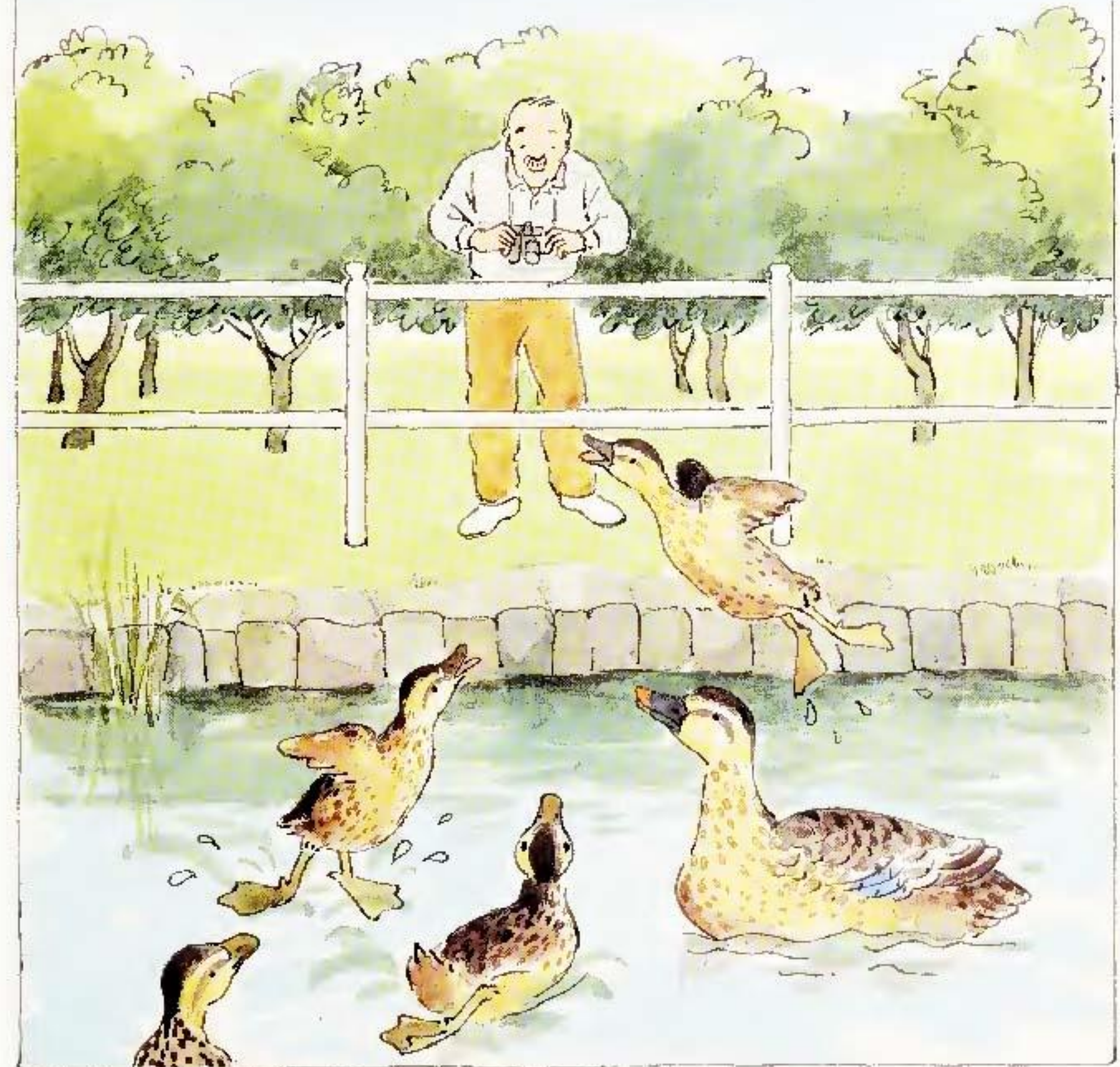


छपाक! चीबी अब अपने परिवार के साथ सम्राट के बाग की खाई में थी।

उस रात टोक्यो के हरेक अख़बार के पहले पन्ने पर बत्तखों की कहानी छपी थी। सातो-सान को अफ़सोस था कि वे *उचीबोरी डोरी* के चौराहे को पार करते बत्तख परिवार की कोई तस्वीर नहीं खींच पाए थे। पर उन्हें यह खुशी थी कि उन्होंने सुरक्षित सड़क पार करने में उनकी मदद की थी।

अध्याय 2

अगली बार जब सातो-सान बत्तखों को देखन गए तो उन्होंने पाया कि चीबी और उसके भाई-बहनों, यानी बढ़ते चूज़ों के लिए यह जगह बिलकुल सही थी। खाने के लिए खाई के पानी में काई और ढ़ेर खरपतवार थी। और उड़ने का अभ्यास करने के लिए खूब जगह भी।



पर *कामो* परिवार वहाँ अकेला नहीं था। सुनहली और रुपहली कार्प मछलियाँ पानी में सर्र-सर्र तैरती भाग रही थीं। चौकोर खोपड़े वाले कछुए खाने की तलाश में ताल के तल तक जाते थे और पानी के साँप चट्टानों पर धूप सेंकते थे। खाई में हंस भी थे। बत्तखों ने पाया कि वे ही खाई के सबसे कम दोस्ताना जीव थे।



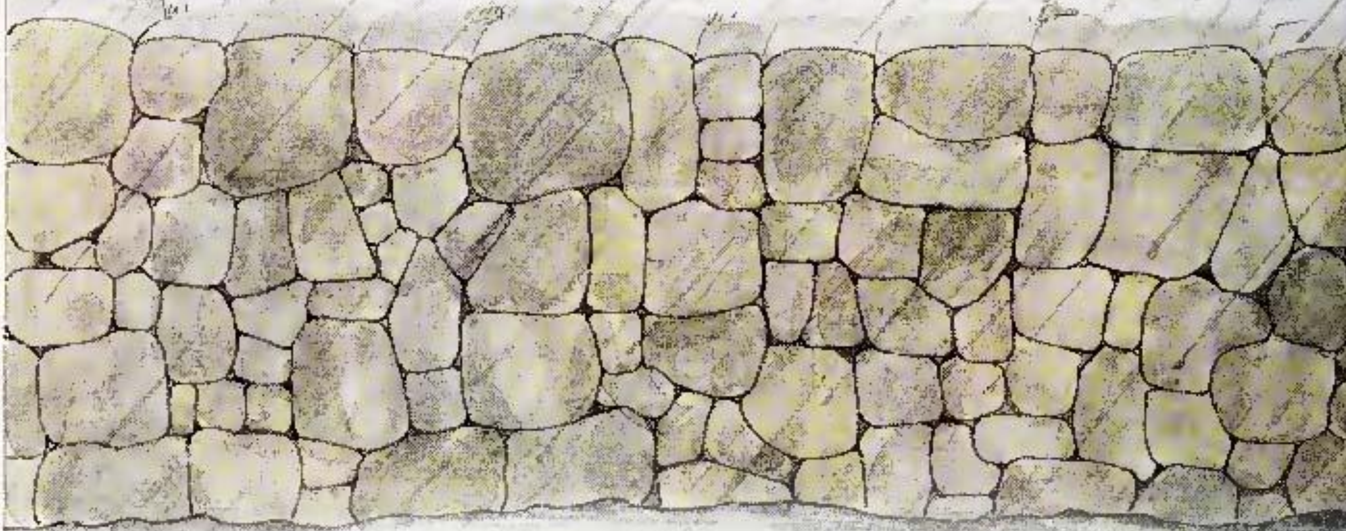
हंस अचानक से सफेद पानी के जहाजों की तरह आते दिखते। जब बत्तखें सामने पड़तीं तो वे गुस्से से फुफकारते या डरावनी आवाज़ निकालते। चीबी को उनके रास्ते से हट पाने में सबसे ज़्यादा दिक्कत होती। वह जैसे ही उन्हें देखती, जितनी तेज़ी से हो सकता था अपने पंजे चला उनसे दूर भागने की कोशिश करती, ताकि उनकी फटफटाती चोंचों से बच सके।

लोग अब यहाँ भी बत्तख परिवार से मिलने उनकी तस्वीरें खींचने आते रहे। खाई के इर्द-गिर्द बने लोहे के जंगले के पास हमेशा भीड़ रहती। बाग़ में दौड़ने वाले भी कुछ पल रुक उन्हें निहारते। चीबी को सब पहचानते थे। जब भी हंस बहुत पास आते लोगों को चिन्ता होने लगती। सातो-सान उनसे मिलने हर दिन आते। चीबी के लिए उनका खास अभिवादन था, *'कोन्नीची-वा'* (शुभ दिन)। वे यह ज़ोर से कहते, उनकी आवाज़ चट्टानों से टकरा कर गूंजती थी।









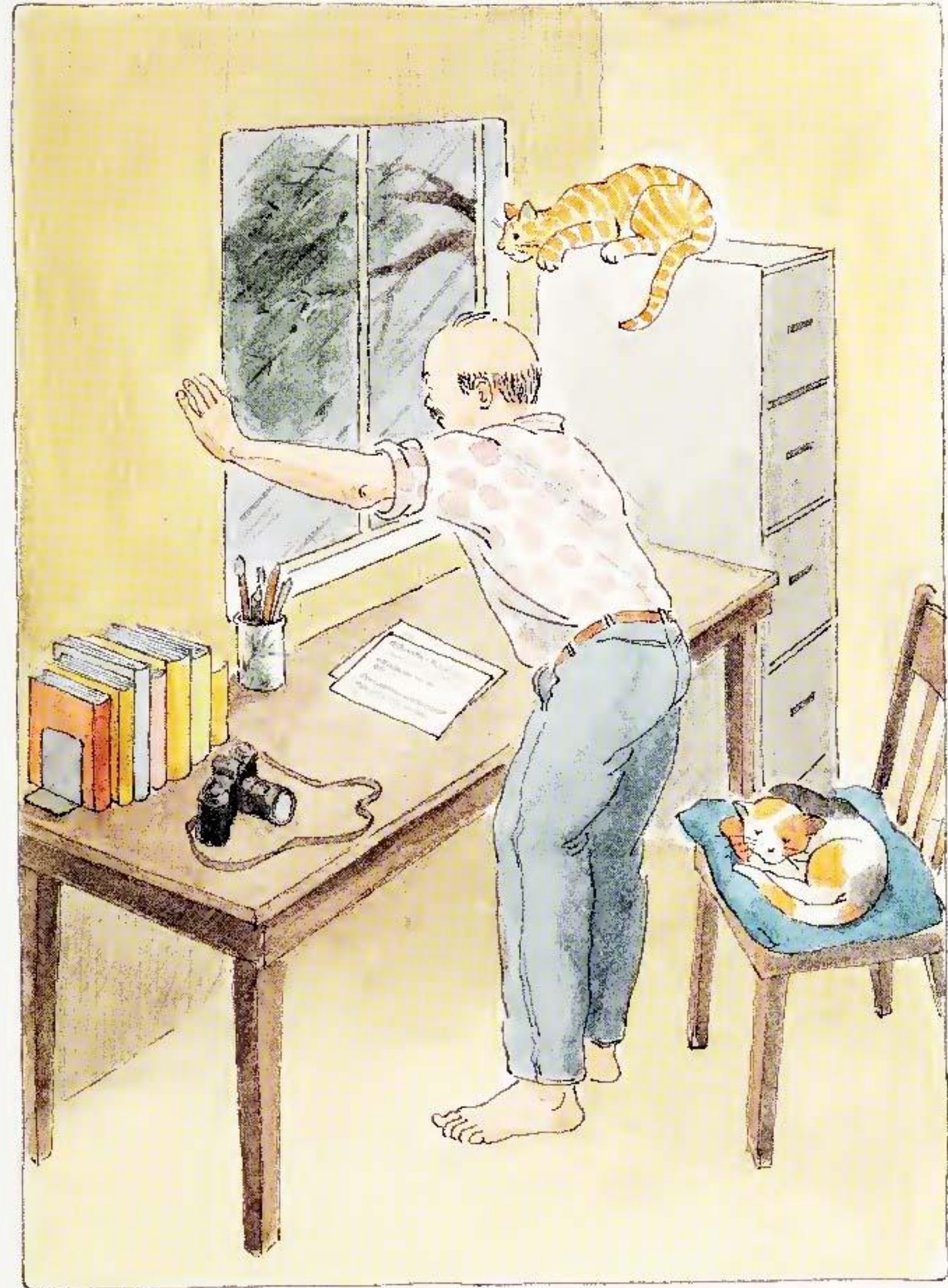


जून में टोक्यो में बारिश का मौसम आ पहुँचा, हर दिन धीमी-धीमी बरासात होती। *उचीबेरी डोरी* का मार्ग पानी और फिसलन से चमचमाता नज़र आता। पर सातो-सान और दूसरे दर्शक अब भी बत्तखों को देखने आते रहे। वे अपनी छतरियों के नीचे इकट्ठा हुए पानी में खड़े हो चीबी और उसके भाई-बहनों को बारिश की बूंदों में खेलते देखते।



पर तब ख़राब मौसम आया। बारिश तेज़ और लगातार होने लगी। हर दिन आँधी-तूफ़ान आने लगा। ज़बरदस्त *काज़े* (हवाएं) बरसात को चादर में बदल गिराने लगीं। हवा से चैरी गाछ की शाखाएं टूटीं, नम्रे की पत्तियाँ टूट कर धरती पर बिछ गईं। खाई पर धुँआदार बरसात हो रही थी। पानी, समुद्री के समान सफेद लहरों में बदल थाटें मारने लगा।

अब कम ही लोग अपने घरों से निकलने की हिम्मत करते थे। *उचीबोरी डोरी* सूनी हो गई, बिरले ही उस पर कोई गाड़ी नज़र आती। सातो-सान, चीबी और दूसरी बत्तखों के लिए फिक्रमन्द थे। उन्होंने किसी तरह खाई तक पहुँचने की कोशिश भी की। पर तेज़ हवाओं के करण घुटनों के बल गिरने के बाद उन्हें घर लौटना पड़ा।



खाई में पानी की सतह उठने लगी। पानी छलका और निकास के रास्ते झरने-सा बहने लगा। पेड़, जड़ें, प्लास्टिक के टुकड़े, यहाँ तक कि सुनहरी कार्प मछलियाँ तक ऊपर उठ आईं। बाढ़ जो आ रही थी। हंस कबके पानी छोड़ अधिक ऊँची जगह जा चुके थे। जहाँ वे एक-दूसरे से सट कर, पंखों में सिर छुपाए बैठे थे। साँप चट्टानों के बीच दुबक चुके थे। कछुए खाई के तल में गंदले पानी में अपनी खोलों में सुरक्षित थे।

पर *कामो* वे भला कहाँ थे? यह सवाल कई लोगों के मन में था। सातो-सान अपने घर में बैठे बत्तखों की, खास तौर से चीबी की फिक्र में डूबे थे।





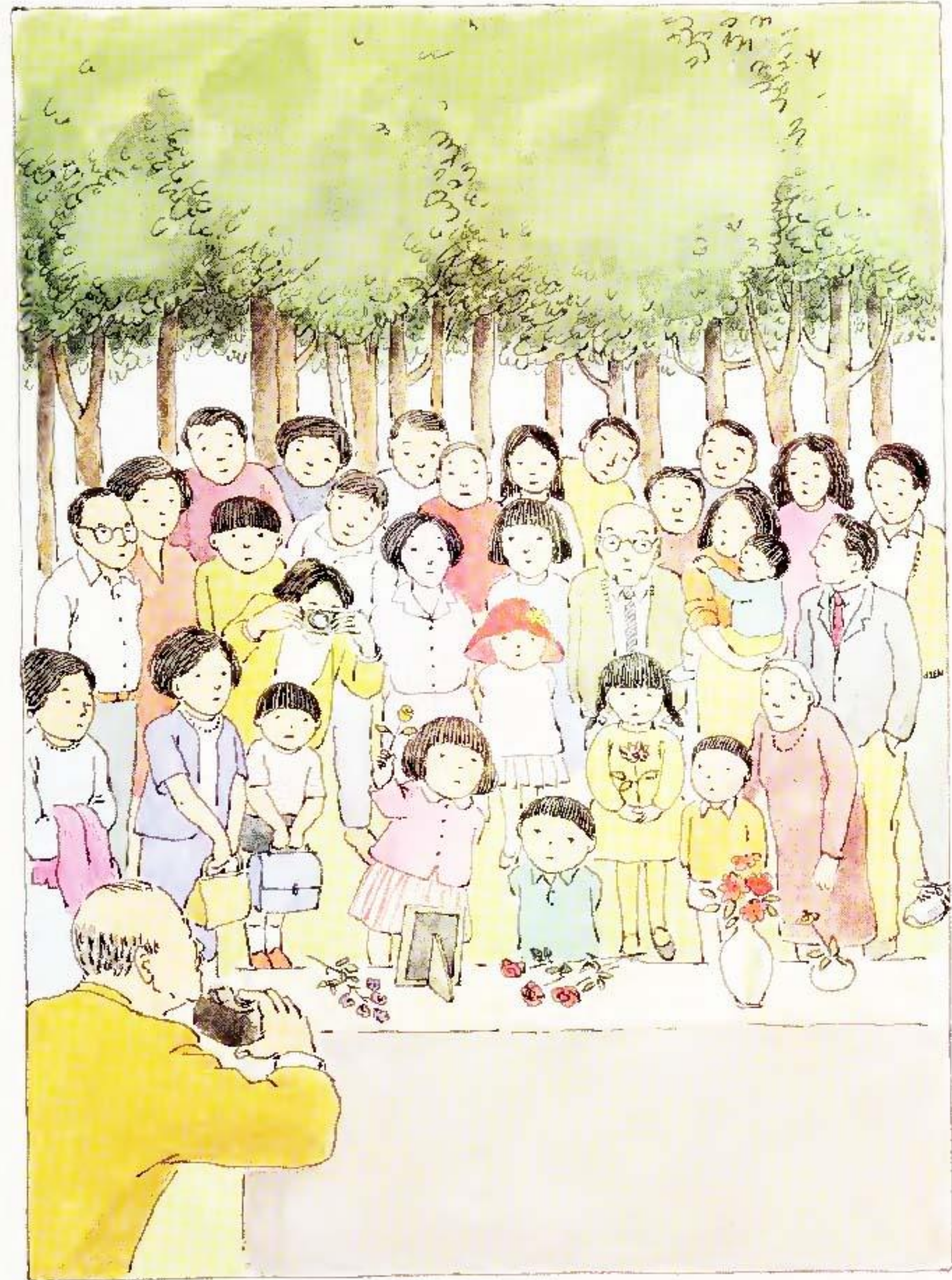
तूफ़ान दिनों-दिन चला। तब बारिश रुकी, आकाश साफ़ हुआ। लोग फिर से घरों से बाहर निकल पाए। बत्तख दर्शक फटाफट सम्राट के बागों में बत्तखों का हाल-चाल पाने गए। पर उनका कहीं नामो-निशान तक नहीं था। सातो-सान ने खाई की पूरी लम्बाई में चक्कर लगाए। अंत-तंत उन्हें माँ बत्तख दिखाई दी। पर उसके साथ केवल सात ही बच्चे थे। तीन चूज़े गायब थे, उनमें एक चीबी भी थी।





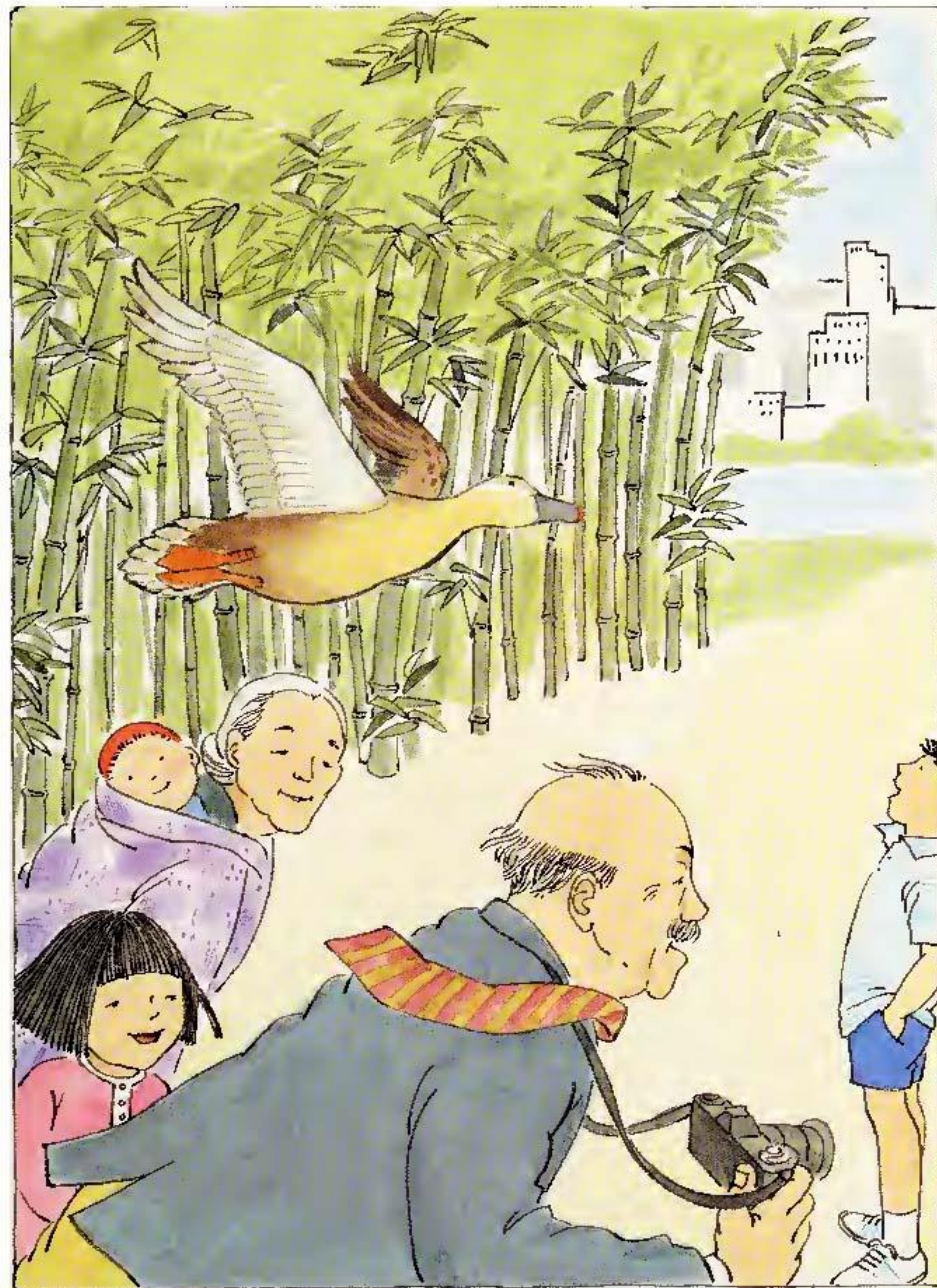
सातो-सान ने फ़ौरन एक खोजी दस्ता बनाया। लोग खाई के एक छोर से दूसरे छोर तक गुम चूज़ों को तलाशने लगे। उन्होंने उनके पैरों के छाप, पंखों, हड्डियों और दूसरे सुरागों को ढूंढ़ा। सम्राट के बाग की रखवाली करने वाले और बागवान भी खोज में शरीक हुए। इस दौरान ओका-सान बेतहाशा चिंचियाती-किंकियाती पानी में आगे-पीछे तैरती अपने बच्चों को तलाश रही थी। वह हवा में उड़ी, खाई के किनारे-किनारे, पत्थर की दीवारों तक को तलाशा। तक *उचीबोरी डोरी* को पार कर मित्सुकी ऑफिस पार्क में गई। वहाँ उसने आइवी के बीच अपने पुराने घोंसले की छानबीन की। पर चीबी और बाकी दो बच्चे कहीं न मिले।

दो दिनों बाद एक चूज़ा मरा हुआ पाया गया। वह बाढ़ में डूब कर मरा था। जब यह ख़बर पता चली सैंकड़ों लोग ताज़े फूल लाए। पानी के निकास के पास उन्होंने डूबे चूज़े का स्मारक बनाया। सातो-सान ने इसकी तस्वीरें भी खींचीं। अगर चीबी का अधिक बड़ा और ताकतवर भाई तूफ़ान की चपेट में आ गया था, तो चीबी के बचने की संभावना भला क्या थी?



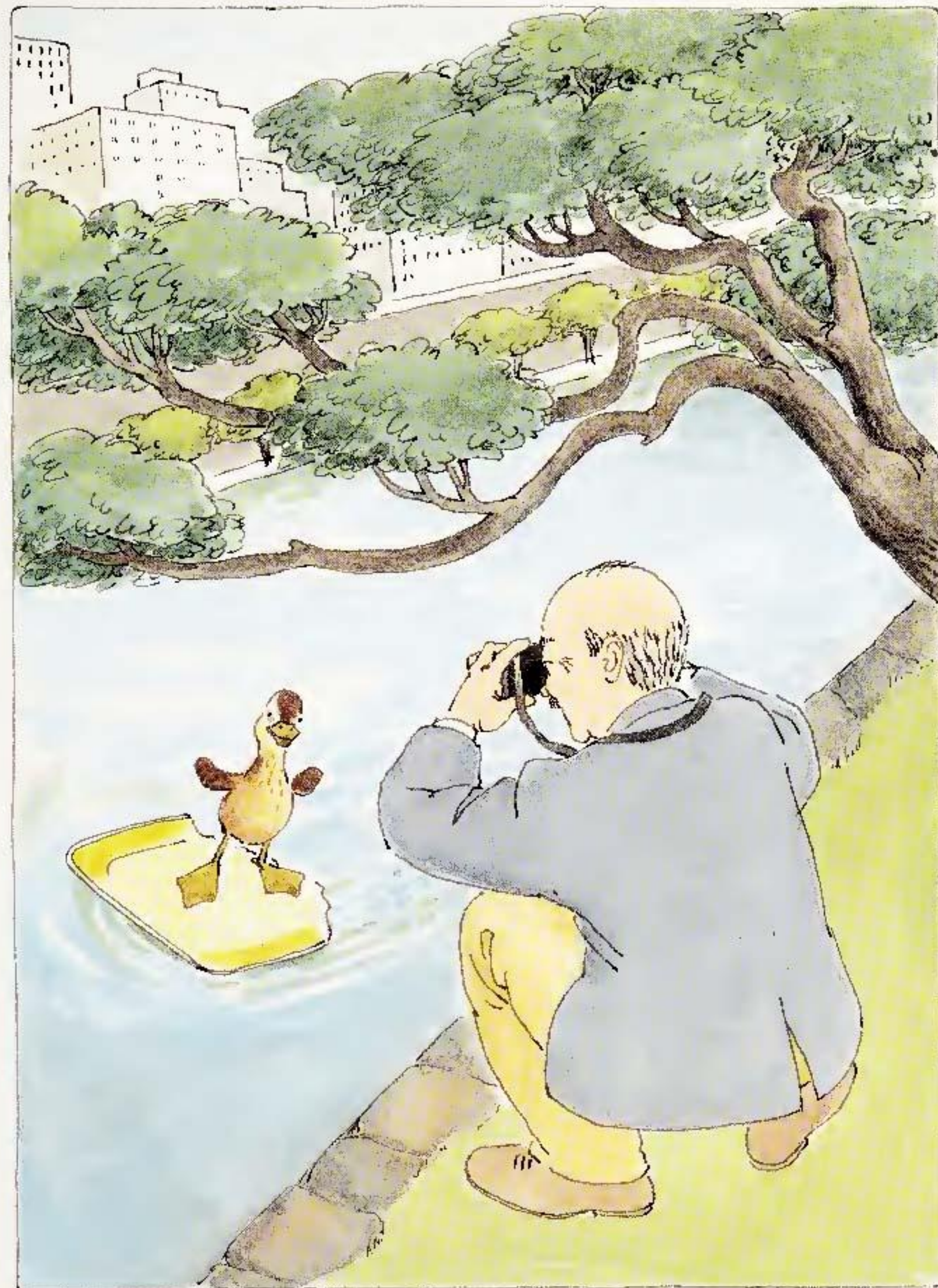
अगले दिन दूसरा चूज़ा भी अचानक लौट आया। किसीको पता न चला कि वह कहाँ था और वापस घर कैसे लौटा। पर वह तूफ़ान के झपाटों के बावजूद ठीक-ठाक था। पर चीबी, वह भला कहाँ थी?

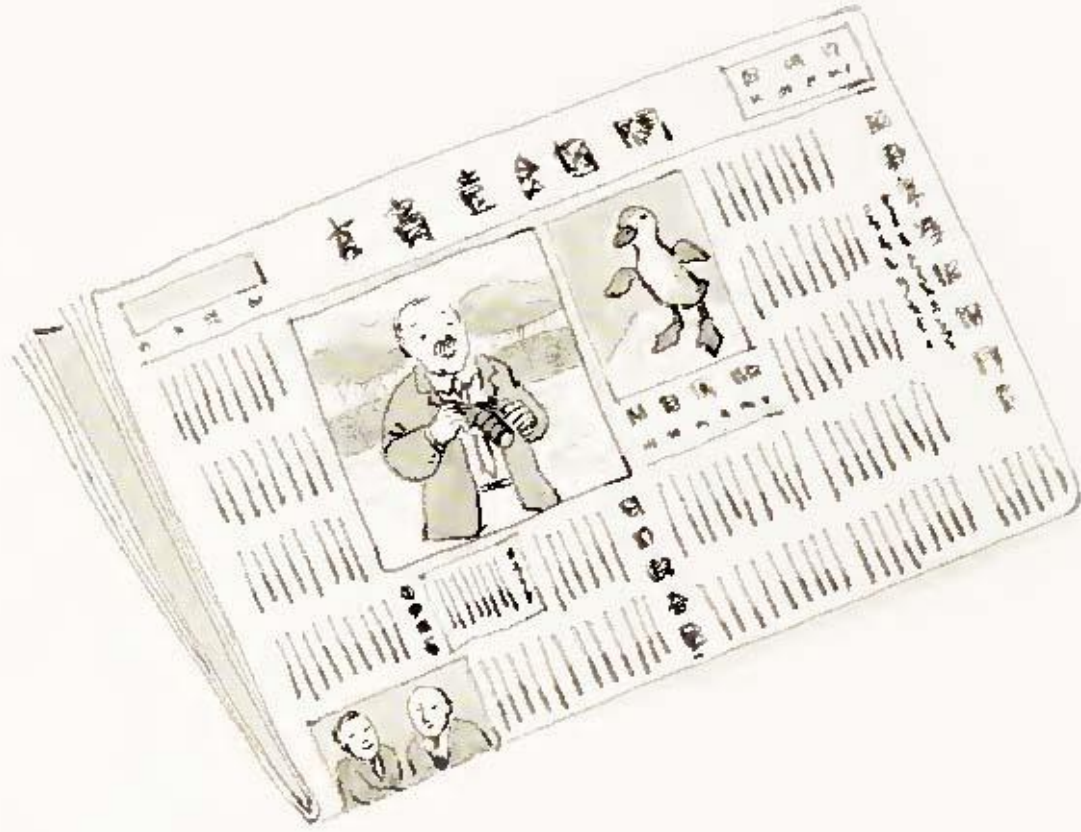
अब कुछ अद्‌भुत घटा। सातो-सान को खाई के दूसरे सिरे से ज़ोरदार आवाज़ें सुनाई दीं। वे उस ओर दौड़े। ओका-सान ने भी सुना। वह भी फ़ौरन उसी दिशा में उड़ी।



पर दोनों वहाँ पहुँचते उसके पहले ही एक नन्ही-सी आकृति तैर कर आती दिखाई दी। यह चीबी ही थी। वह किसी सर्फर (लहरों की सवारी करने वाला) की तरह स्टायरोफोम के टुकड़े पर खड़ी थी। यह साहसी छोटी बत्तख किसी तरह अपने काम-चलाऊ बेड़े के सहारे आँधी-तूफ़ान का सामना कर सकी थी। प्लास्टिक के उस टुकड़े ने उसकी जान बचाई थी।

क्लिक! सातो-सान के कैमरे ने खुशी के इस पल को कैद कर लिया।

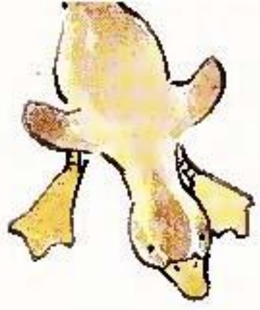




चीबी के लौटने की कहानी सातो-सान की तस्वीर के साथ टोक्यो के सभी अख़बारों में छपी। जब सम्राट ने साहस के साथ तूफ़ान से लड़ने वाले *कामो* परिवार की बात सुनी, उन्होंने हुकुम दिया कि उनके लिए एक मज़बूत और सुन्दर बत्तख घर बनाया जाए।



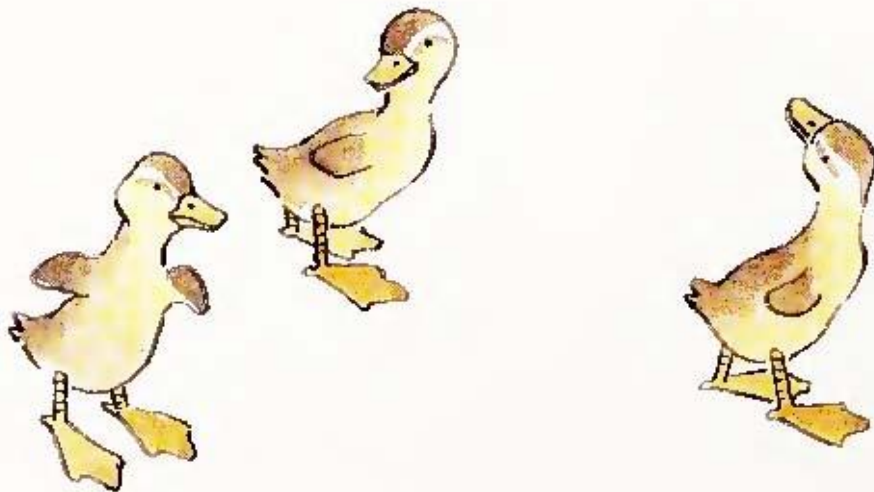
यह आज भी सम्राट के बाग की खाई में खड़ा है। हर साल चीबी और उसके भाई-बहन वहाँ घोंसला बनाने और अपने चूज़ों को पालने-पोसने के लिए वहाँ आते हैं। अगर आप वहाँ जाएं तो एक बुज़ुर्ग जापानी भद्रपुरुष को तस्वीरें खींचते पाएंगे।



कहानी के पीछे

चीबी एक सच्ची कहानी पर आधारित है। जूलिया ताकाया, अमरीकी शिक्षिका-लेखिका एक जापानी व्यवसायी से विवाहित थीं। वे टोक्यो के उन हज़ारों निवासियों में एक थीं, जो उस साहसी बत्तख माँ की कहानी की चश्मदीद गवाह थीं, जो शहर के बीच अपने खानदान को पाल-पोस रही थी। तमाम फोटोग्राफरों, ख़बरनवीसों और शहर के निवासियों की तरह जूलिया ताकाया भी इन बत्तखों के सम्मोहन में फंस चुकी थीं।

जब वे बाद में अमरीका वापस लौटीं वे यह कहानी साथ लेती आई थीं। जूलिया और लेखिका बारबरा ब्रैनर इस बात पर सहमत थे कि चीबी और तस्वीरें खींचने वाले बुज़ुर्ग मिस्टर सातो, सम्राट के बाग की खाई और उसमें आई बाढ़ की कहानी कालातीत है, और बच्चों को हमेशा पसन्द आने वाली सच्ची कहानी है।

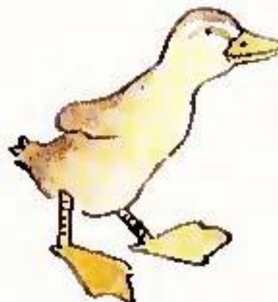




कुछ और तथ्य जिन्हें शायद आप जानना पसन्द करें:

इस कहानी की बत्तख आनस पोएसिलरिंका प्रजाति की है, जिसका अंग्रेज़ी में आम नाम स्पॉटबिल डक है।

टोक्यो की मित्सुई कम्पनी ने अपने ऑफिस के पार्क के ताल में हर साल वापस लौटने वाली बत्तखों और उनके परिवारों के लिए एक बत्तख-घर बनाया है।



बारबरा ब्रैनर

बच्चों की कहानियाँ व प्रकृति पर पुस्तकों की रचयिता हैं। वे बैंक स्ट्रीट कॉलेज ऑफ एज्युकेशन की सक्रिय सदस्य हैं। वे अपने कलाकार पति फ्रैड ब्रैनर के साथ हॉली, पेन्सिलवेनिया में रहती हैं।

जूलिया ताकाया

एक शिक्षिका व लेखिका हैं। वे इत्तिफ़ाकन उस वक़्त ऑफिस पार्क में मौजूद थीं जब जंगली बत्तख परिवार को पहली बार देखा गया था। मिस्टर सातो की ही तरह वे इस बहादुर माँ बत्तख की मुरीद बन गईं, जो शहर की चहल-पहल के बीच अपने परिवार को पालने की कोशिश कर रही थी। जूलिया अपने पति के साथ साल का अधिकतर हिस्सा जापान में बिताती हैं।

जून ओतानी

की रचनाएं कई कलादीर्घाओं में प्रदर्शित हैं। उन्होंने बच्चों की कई सचित्र पुस्तकों के चित्र बनाएं हैं। वे अपने पति के साथ न्यू यॉर्क के हेस्टिंगस्-ऑन-हडसन में रहती हैं।

चीबी: जापानी सत्यकथा

लेखन: बारबरा ब्रैनर व जूलिया ताकाया
चित्र: जून ओतानी
भाषन्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा